International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 1427-1429

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 1427-1429
www.allresearchjournal.com
Received: 24-04-2017
Accepted: 08-06-2017

Pooja sharma
M.phil scholar, University of Jammu, Jammu, Jammu and Kashmir, India

Corresponding Author:
Pooja sharma
M.phil scholar, University of Jammu, Jammu, Jammu and Kashmir, India

हिन्दी संस्मरण साहित्य : एक परिचय

Pooja sharma

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य के इतिहास में गद्य–साहित्य का अपना विषेश महत्व है। हिन्दी गद्य विधाओं को दो धाराओं में विभाजित किया गया है। प्रमुख गद्य विधाएं तथा गौण गद्य विधाएं। हिन्दी की प्रमुख गद्य विधाओं में नाटक, निबन्ध, उपन्यास, कहानी तथा गौण विधाओं में जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, रिपार्ताज, यात्रावृतांत, डायरी, साक्षात्कार हैं। हिन्दी साहित्य की अन्य नवीनतम विधाओं में संस्मरण एक महत्वपूर्ण विधा है। जीवनीपरक साहित्य का यह अत्यंत ललित एवं लघु कलात्मक अंग है। संस्मरण, जीवनी तथा आत्मकथा का सम्मिलित रूप है जिसमें लेखक अपनी स्मृतियों को बड़ी कोमलता से लेखनीबद्ध करता है। जीवन अभिव्यक्ति का यह रूप स्मरण पर आधारित है। भारत काव्यषास्त्र में स्मरण अलंकार रूप में प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन आज संस्मरण एक स्वतंत्र विधा के रूप में प्रचलित है।

संस्मरण गद्य की एक आत्मनिश्ठ विधा है। संस्मरण लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन तथा उसके सम्पर्क में आए अन्य व्यक्तियों के जीवन के कुछ पहलुओं को याद कर, उन्हें लेखनीबद्ध करता है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में नित्य ही कितने व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं। साधारण व्यक्ति इन क्षणों को भूल जाता है, किन्तु एक संवेदनषील लेखक के दिलो–दिमाग में यह क्षण सदा–सर्वदा विद्यमान रहते हैं। इन क्षणों की याद जब लेखक को व्याकुल कर देती है, तभी संस्मरण साहित्य का सृजन होता है।

पष्चिम में संस्मरण के लिए दो षब्दों का प्रयोग किया जाता है – रेमिनिसेंसेज और मेमायर्स। जब लेखक अपने सम्बन्ध में लिखता है तो उसे रेमिनिसेंसज कहा जाता है और जब किसी दूसरे के लिए लिखता है तो उसे मेमायर्स कहते हैं। किंतु हिन्दी साहित्य में लेखक जब अपने संबंध में लिखता है, तो इन दोनों के लिए संस्मरण षब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

संस्मरण लेखक जो कुछ देखता तथा अनुभव करता है, उन्हीं अनुभूतियों को वह अपनी रचना में प्रस्तुत कर देता है। संस्मरण लेखक के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित है इसलिए इसे गद्य की आत्मनिश्ठ विधा कहा जाता है। संस्मरण की भांति रेखाचित्र का सम्बन्ध भी व्यक्ति जीवन से होता है इसलिए इन्हें मिलती–जुलती विधाएं माना जाता है लेकिन संस्मरण में विवरण की अधिकता रहती है और रेखाचित्र में वर्णन की। आधुनिक युग में संस्मरण की स्वतन्त्र सत्ता है। स्वातन्त्रयोत्तर काल में देष के जीवन की अनेकरूपता के साथ साहित्य के इस क्षेत्र में अधिकाधिक प्रगति हुई है।

संस्मरण षब्द की व्युत्पत्ति सम्+स्मृ+त्युट (अनु) से हुई है जिसका अर्थ है – स्मयक स्मृति। यानि सहज आत्मीयता तथा गंभीरतापूर्वक किसी व्यक्ति, घटना, दृष्य अथवा वस्तु का पूर्णरूपेण स्मरण करना, 'संस्मरण' षब्द अंग्रेजी के मेमायर्स के समानार्थक के रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होता है। मेमायर्स में लेखक किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ बिताए समय में होने वाले मधुर–कटु अनुभवों का वर्णन करता है।

संस्मरण किसी स्मर्यगाण की स्मृति का षब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ, चारित्रिक वैषिश्टय जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाते हैं। उन्हें वह षब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विषिश्ट, विचित्र और प्रिय हो। संस्मरण में विशय और विशयी दोनों रूपायित होते हैं। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत संस्मरण में व्यक्तित्व को अधिक महत्व देते हैं। उनका कथन है, "भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत षैली में अपने व्यक्तित्व की विषिश्टताओं से विषिश्ट बनाकर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।"[1]

हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार, "स्मृति के आधार पर किसी विशय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख या ग्रन्थ को संस्मरण कह सकते हैं।"[2]

महादेवी वर्मा ने अपने स्मृतिचित्रों के सम्बन्ध में लिखा है, "इन स्मृतिचित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभिक भी था। अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाष की धुंधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं। उसके बाहर तो वे अनन्त अन्धकार के अंष हैं।[3]

संस्मरण में मुख्यतः स्मृति को ही महत्व दिया जाता है और यह स्मृति किसी भी रूप में हो सकती है – कोई विषेश घटना, परिस्थिति, पात्र, सुख–दुख की स्मृतियां आदि। संस्मरण लेखन का आधार समाज के केवल उच्च, राजनेता, भद्र पुरुश न होकर आमजन तथा सजीव–निर्जीव वस्तुएं भी संस्मरण साहित्य का विशय बन सकती हैं।

• संस्मरण के तत्व

संस्मरण भी गद्य की अन्य विधाओं की तरह एक स्वतंत्र विधा है। इसके भी कुछ निर्धारकर तत्व हैं।

वर्ण्य विशय

संस्मरण के तत्वों की व्याख्या में हमारा ध्यान सबसे पहले वर्ण्य विशय पर ही जाता है। संस्मरण लेखक अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना, या संपर्क में आए किसी अविस्मरणीय व्यक्ति के चरित्र को प्रस्तुत करता है। संस्मरण विधा अन्य विधाओं की तरह कल्पना प्रसूत न होकर यर्थाथ के धरातल पर खड़ी है। संस्मरण के वर्ण्य विशय वास्तविक होने के साथ विष्वसनीय और बोधगम्य होते हैं। संस्मरण लेखक भी कल्पना का प्रयोग करते हैं लेकिन रूप बदलकर। संस्मरण का वर्ण्य वास्तविक होता है और आनंद काल्पनिक।

पात्र–योजना

संस्मरण का दूसरा तत्व पात्र–योजना है। संस्मरण व्यक्ति जीवन से संबंधित होता है इसमें लेखक उसके संपर्क में आए विभिन्न व्यक्तियों जैसे साहित्यकारों, राजनेता, प्रसिद्ध व्यक्ति आदि की स्मृतियों को षब्दांकित करता है। पहले ऐसा माना जाता था कि संस्मरण में केवल प्रसिद्ध व्यक्ति के चरित्र को ही चित्रित किया जाता है। लेकिन महादेवी वर्मा के संस्मरणों को देखने के पष्चात यह धारणा गलत साबित हो गई। उनकी रचनाएं स्मृति की रेखाएं, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी इस बात की प्रमाण हैं कि संस्मरण केवल प्रसिद्ध व्यक्तियों पर ही नहीं, बल्कि आमजन तथा सजीव–निर्जीव वस्तुओं तथा वन्य प्राणियों पर भी लिखे जा सकते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि संस्मरण लेखक के लिए किसी न किसी रूप में वर्ण्य चरित्र के निकट संपर्क में आना अनिवार्य होता है। पात्र योजना के माध्यम से ही लेखक अपने सम्बन्ध में तथा दूसरों के बारे में अपने अनुभव लिखकर बहुमूल्य जानकारी देता है।

अतीत की स्मृति

संस्मरण अतीत पर आधारित होता है, इसमें संस्मरणकार अपने जीवन की विषेश घटनाएं, कुछ ऐसे पल, जो उसे याद रह जाते हैं सहेज कर उन यादों को लिखित रूप में व्यक्त कर देता है। जिसे पढ़कर पाठकों को लगता है कि वह उस घटना से रूबरू हो रहा है।

चित्रात्मकता

संस्मरण साहित्य की एक प्रमुख विषेशता है कि वह जितना चित्रात्मक होगा, उतना ही अधिक सफल होगा, क्योंकि चित्र मनुश्य मस्तिश्क पर अधिक प्रभाव डालते हैं। लेखक सोच–समझकर चुन–चुन कर षब्दों का प्रयोग करता है कि चित्र सहज ही बनने लगे।

तटस्थता

तटस्थता भी संस्मरण की मुख्य विषेशता है। जब किसी व्यक्ति, घटना, स्थान के बारे में स्मृति के सहारे लिखा जाता है, तब यह जरूरी होता है कि जो भी लिखा जा रहा है, वह तथ्यपूर्ण हो, कुछ ऐसा न लिखा जाए, जो किसी व्यक्ति के बारे में गलत जानकारी दे।

उद्देष्य

संस्मरण साहित्य का मुख्य उद्देष्य अपनी अनुभूतियों को संवेदना के धरातल पर स्थापित करके, मोहक व मधुर स्मृतियों को भावात्मक षैली में व्यक्त करने के साथ उन स्मृतियों से पाठक का साक्षात्कार करवाना होता है। ये स्मृतियां जहां आत्मसंतोश प्रदान करती हैं, तो वहीं दूसरों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य भी करती है।

भाशा षैली

संस्मरण की भाषा पत्रकारिता से उपजी है। इसकी भाषा सरल, वर्णनीय और अभिधात्मक होती है।

• हिन्दी संस्मरण का इतिहास

संस्मरण साहित्य का विकास मुख्य रूप से आधुनिक काल में दृश्टिगोचर होता है। आधुनिक काल के प्रारम्भिक दौर में संस्मरणात्मक साहित्य का अभाव है। हिन्दी साहित्य में जो संस्मरण लिखे गए हैं वे अधिकतर 1920 ई. के पष्चात के हैं। संस्मरण लिखने की प्रथा 'माधुरी' सुधा, विषाल भारत आदि कुछ ही पत्रों ने विकसित की और ये सभी पत्र 1920 के बाद प्रकाषित हुए।

भारतेन्दु युग

आधुनिक युग के जनक भारतेन्दु हरिष्चन्द्र के समय से ही संस्मरण साहित्य का आविर्भाव दिखाई पड़ता है। इस युग के प्रसिद्ध निबंधकार प्रतापनारायण मिश्र ने ब्राह्मण पत्रिका में प्रतापचरित्र नामक संस्मरणात्मक लेख प्रकाषित किया। यह आत्मकथात्मक संस्मरणों का संग्रह था। राजा षिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 'सवा नेह उभरी' नामक संस्मरण लिखा जिसमें उन्होंने अपने जीवन से संबंधित संस्मरण प्रस्तुत किए। इस युग में संस्मरण केवल पत्र–पत्रिकाओं में ही प्रकाषित होते थे। इस युग में संस्मरण नाम से कोई भी कृति प्रकाषित नहीं हुई किन्तु यत्र–तत्र साहित्यकारों ने जो संस्मरणात्मक लेख लिखे, उनका संस्मरण साहित्य के विकासक्रम में विषेश महत्व है।

द्विवेदी युग

संस्मरण लेखन का षुभारम्भ सही अर्थों में द्विवेदी युग से होता है। सरस्वती इस युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्रिका थी। इसके विभिन्न अंकों में समय–समय पर अनेक संस्मरण प्रकाषित होते रहे हैं। आचार्य द्विवेदी ने स्वयं अनुमोदन का अंत (1905), सभा की सभ्यता (1907), विज्ञानाचार्य वासु का विज्ञान मंदिर (1918) आदि की रचना करके संस्मरण साहित्य की वृद्धि की। द्विवेदी जी के अतिरिक्त अनेक साहित्यकारों ने सरस्वती पत्रिका के विभिन्न अंकों में अपने–अपने संस्मरणात्मक लेख प्रस्तुत किए।

द्विवेदी युग में प्रकाषित अधिकांष संस्मरण प्रवासी भारतीयों द्वारा लिखे गए हैं जिनमें सभी का उद्देष्य भारतीय पाठकों को पष्चिम के रीति–रिवाजों, दर्षनीय स्थलों से परिचित कराना था। इस युग में लिखे गए अधिकांष संस्मरण स्फुट लेखों के रूप में प्रकाषित हुए। हिन्दी संस्मरण की परम्परा में पद्मसिंह षर्मा के पद्मपराग को सफल संस्मरण माना जाता है किन्तु अधिक कलात्मक और सजीव संस्मरण द्विवेदी युग के बाद ही लिखे गए।

छायावाद

हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास की दृश्टि से छायावाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस युग में भी 'सुधा', विषाल भारत, माधुरी, सरस्वती विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से संस्मरण साहित्य का विकास हुआ। इन पत्रिकाओं में आचार्य रामदेव ने

'स्वामी श्रद्धानन्द' से संबंध, अमृतलाल चतुर्वेदी ने 'बालमुकुंद गुप्त' से सम्बन्ध, मंगलदेव षर्मा ने 'पद्मसिंह षर्मा' से संबंध जीवनीपरक संस्मरणों की रचना करके हिन्दी संस्मरण साहित्य को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है। वृन्दावनलाल वर्मा (कुछ संस्मरण), इलाचन्द्र जोषी (मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतियां) छायावाद के प्रमुख संस्मरणकार है। छायावादी युग में स्फुट संसमरणों के अतिरिक्त स्वतन्त्र संकलन के रूप में भी संस्मरण प्रकाषित हुए। छायावाद में संस्मरणात्मक रेखाचित्र भी लिखे गए। इस सन्दर्भ में श्रीराम षर्मा कृत 'बोलती प्रतिमा' (1937) विषेश रूप से उल्लेखनीय हैं।

छायावादी युग में विषेशकर संस्मरणों में कथ्य और षिल्प दोनों दृश्टियों से वैविध्य दृश्टिगोचर होता है। कथ्य की दृश्टि से संस्मरण साहित्य में समाजसेवी नेता, साहित्यकार तथा प्रवासी भारतीयों के स्मृति प्रंसगों को रोचक तथा प्रवाहपूर्ण षैली में प्रस्तुत किया गया है तथा समाज के साधारण व्यक्तियों, षिल्प की दृश्टि से इस युग के संस्मरणों की प्रमुख विषेशता चित्रात्मकता रही है। कथ्य को सषक्त रूप देने के लिए षब्दचित्रों का प्रयोग करके संस्मरण साहित्य के लिए नवीन षैली का श्रीगणेष भी इसी युग में किया गया ।

छायावादोत्तर युग

छायावादोत्तर युग में संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन को लेकर दो धाराएं प्रवाहमान हुई। प्रथम धारा की प्रतिनिधि कवयित्री महादेवी वर्मा ने संस्मरण एवं रेखाचित्र को परस्पर अंर्तभुक्त मानते हुए रचनाएं की और दूसरी धारा के प्रतिनिधि प्रकाषचन्द गुप्त ने इन दोनों विधाओं के तात्विक भेद को स्वीकार कर दोनों विधाओं में स्वतंत्र रचनाएं की। इस युग के संस्मरण साहित्य में विशय का वैविध्य देखने को मिलता है। जीवन के विविध क्षेत्रों चिकित्सा, फिल्म संसार, संगीत, नृत्य से संबंधित लोग तथा मुख्य रूप से मनुश्य के साथ–साथ जीव–जन्तुओं एवं निर्जीव वस्तुएं भी संस्मरण का पात्र बनीं। यह संस्मरण साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण पहल थी। सन् सत्तर, अस्सी तथा नब्बे के दषक में साहित्यकारों पर संस्मरण लिखने की प्रवृति ही केन्द्र में रही। इसके अलावा परिवारजनों, पड़ोसियों, ग्राम्य जीवन, राजनीति पर भी संस्मरण लिखे गए।

समकालीन संस्मरणकार

नयी षताब्दी में हिन्दी में संस्मरणों के भीतर ही संस्मरणों के कई रूप प्रकट हुए हैं, जैसे साहित्यकारों तथा साहित्य की दुनिया पर लिखे संस्मरण, अत्यन्त साधारण जनों, षहरों, घटनाओं, स्थानों या दृष्य पर लिखे गए संस्मरण। आज का संस्मरणकार अपने साहित्य में भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त करने का प्रयास कर रहा है।

• संस्मरण तथा अन्य निकटवर्ती विधाएं

हिन्दी गद्य साहित्य की कुछ विधाएं आपस में इतनी मिलती–जुलती है कि उनके बीच विभाजक रेखा खींचना बड़ा कठिन है। श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी लिखा है – "संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मचरित इन तीनों का एक–दूसरे से इतना घनिश्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहां मिलती है और कहां अलग हो जाती है, इसका निर्णय करना कठिन है।"[4]

संस्मरण और रेखाचित्र

साहित्यिक विधाओं में रेखाचित्र ही ऐसी विधा है जिसे हम संस्मरण साहित्य के सबसे निकट पाते हैं। दोनों विधाओं में बहुत समानता है। दोनों ही अतीत की स्मृतियों तथा व्यक्ति जीवन से संबंधित है। साम्य होते हुए भी दोनों विधाओं में भेद स्पश्ट रूप से परिलक्षित होता है। संस्मरण लेखक अच्छी–बुरी यादों को स्पश्ट करने के लिए स्मरणकर्ता के आकार, भाव, वेषभूशा को भी उद्घाटित करता है। अपनी रचना को आकर्शक बनाने के लिए लेखक व्यक्ति की व्यक्तिगत विषेशताओं का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन करता है। जबकि रेखाचित्रकार व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की झांकी प्रस्तुत करने के लिए व्यक्ति की बाहरी रूपरेखाओं को अंकित करता हुआ कम से कम षब्दों का प्रयोग कर व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को ह्रदयस्पर्षी बनाने का प्रयास करता है। संस्मरणों में भावात्मकता का बाहुल्य होता है इसके विपरीत रेखाचित्र में तटस्थता पर बल दिया जाता है।

संस्मरण और जीवनी

संस्मरण तथा जीवनी में समानता कई बिन्दुओं पर पाई जाती है। पर इनमें अन्तर भी स्पश्ट है। संस्मरण मानव जीवन की समग्रता को प्रतिबिंबित करता है जबकि जीवनीकार उसके सारे विस्तार को समेटता है। संस्मरण केवल उन्हीं व्यक्तियों पर लिखा जाता है, जिनसे लेखक का व्यक्तिगत सम्बन्ध हो। लेकिन जीवनी लेखन में ऐसा जरूरी नहीं है। जीवनी हम पुस्तकों में उपलब्ध सामग्री के आधार पर भी लिख सकते हैं। जीवनी लेखक, जीवनी में गायब होता है, लेकिन संस्मरण में विशय तथा विशयी दोनों रूपायित होते हैं।

संस्मरण और आत्मकथा

आत्मनिश्ठता तथा स्मृति तत्व दोनों ही विधाओं में प्रमुख होता है। संस्मरण में दूसरे व्यक्ति के जीवन के बारे में लिखा जाता है जबकि आत्मकथा में लेखक खुद की कहानी स्वयं कहता है। आत्मकथा में पूर्णता होती है, लेकिन संस्मरण में पूर्णता का अभाव रहता है। संस्मरण जीवन के किसी एक पहलू को लेकर लिखा जाता है जबकि आत्मकथा में लेखक अपने पूरे जीवन को क्रमवार रूप में प्रकट करता है। संस्मरण में क्रम का कोई महत्व नहीं है।

संस्मरण और रिपोर्ताज

संस्मरण और रिपोर्ताज में यर्थाथ की विष्वसनीयता और संवेदनानुभूति समान रूप से आवष्यक है। रिपोर्ताज में घटना या दृष्य की प्रधानता होती है तो संस्मरण में व्यक्ति प्रधान होता है। रिपोर्ताज में वातावरण तथा परिस्थिति का चित्रण आवष्यक होता है जबकि संस्मरण में स्मरणकर्ता या घटना से ही परिस्थिति तथा वातावरण का ज्ञान हो जाता है। संस्मरण मुख्यतः व्यक्ति प्रधान विधा है जबकि रिपोर्ताज घटना प्रधान।

संस्मरण और यात्रा साहित्य

संस्मरण और यात्रा–साहित्य स्वानुभूति रचनाएं हैं। संस्मरणकार संस्मणर्य व्यक्ति की मधुर–कटु स्मृतियों का वर्णन करता है तो यात्रा साहित्यकार स्थान विषेश का चित्रण करता है।

उपसंहार

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में संस्मरण आधुनिक काल की विधा है। स्वतंत्रता के बाद संस्मरण ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने की दिषा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। समकालीन संस्मरणकारों ने प्राचीन श्रद्धामूलक संस्मरण लेखन परिपाटी को तोड़, तत्कालीन परिवेष तथा परिस्थितियों का यर्थाथपरक वर्णन करने का प्रयास किया है। यह संस्मरण साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण पहल है।

संदर्भ

1. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत, षास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, पृ. 497, भारतीय साहित्य भण्डार, दिल्ली, 1974
2. सं. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोष, भाग–2, पृ. 794, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1958
3. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, पृ. 2, भारती भण्डार, इलाहाबाद, चौदहवां संस्करण, 1974
4. बनारसी दास चतुर्वेदी, संस्मरण, पृ. 4, भारतीय ज्ञानपीठ, काषी, प्र. सं. 1952